

पाठ-1

कबीर

(भक्तिकालीन निर्गुण काव्यधारा के संतकवि)

परिचय— कबीर का जन्म सन् 1398 में काशी में हुआ था। नीरु और नीमा नामक जुलाहा दम्पति ने इनका लालन-पालन किया। ये गुरु रामानन्द के शिष्य थे। कबीर पढ़े-लिखे नहीं थे यह उन्होंने स्वयं स्वीकार किया है वे कहते हैं :-

मसि कागद छुयो नहीं, कलम गही नहि हाथ।

सन् 1518 में मगहर में उनका देहावसान हो गया।

रचनाएँ — बीजक (साखी, सबद, रमैनी) कबीर की कुछ रचनाएँ गुरु ग्रन्थ साहब में संकलित हैं।

काव्यगत विशेषताएँ — भक्तिकाल की निर्गुण (निराकार रूप के उपासक) काव्यधारा के संत कवि कबीर का आविर्भाव ऐसे समय में हुआ जब राजनीतिक, धार्मिक एवं सामाजिक क्रान्तियाँ अपने चरम पर थी। कबीर क्रान्तिकारी कवि थे। एक ओर कबीर ने समाज में फैली कुरीतियों एवं आडम्बरों पर प्रहार किया दूसरी ओर उनका भक्तरूप देखने को मिला।

कबीर की रचनाओं की भाषा सधुक्कड़ी है। सधुक्कड़ी में बोलचाल की अवधी, भोजपुरी, पंजाबी अत्यादि बोलचाल की भाषाओं के शब्दों का प्रचुर मात्रा में प्रयोग है। इसलिए सधुक्कड़ी को पंचमेल खिचड़ी भाषा कहा जाता है। कबीर का काव्य तुकात्मकता एवं लयबद्धता के कारण गेय है। अर्थात् इसे गाया जा सकता है। उन्होंने साखी, सबद एवं रमैनी के माध्यम से अपनी भावनाओं को जनमानस तक पहुँचाया। कबीर के काव्य में अलंकारों का स्वाभाविक प्रयोग है।

पद 1 — अरे इन दोउन.....राह हवै जाई ।

प्रसंग / मूलभाव

प्रस्तुत पद कबीर के 'बीजक' संग्रह से उद्धृत है। हिन्दू एवं मुसलमान दोनों धर्मों में व्याप्त कर्मकाण्ड एवं आडम्बरों का विरोध करते हुए कबीर कहते हैं कि ये

दोनों अज्ञानतावश बाह्य कर्मकाण्डों को वास्तविक धर्म मान बैठे हैं इन्हें धर्म के मर्म का ज्ञान नहीं है धर्म का वास्तविक अर्थ है उचित कर्मों से व्यक्ति एवम् समाज का मार्गदर्शन करना, परन्तु ये केवल दिखावा करते हैं। वास्तव में ये दोनों ही पथभ्रष्ट हो चुके हैं। इनका यह अज्ञान परमात्मा की प्राप्ति में बाधक है।

व्याख्या बिंदु — हिंदुओं के विषय में कबीर का कहना है कि ये वर्ण-भेद में विश्वास करते हैं उच्च वर्ग का व्यक्ति निम्न-वर्ण के व्यक्ति को अस्पृश्य मानता है उसे अपने पात्रों (बर्तनों) को छूने नहीं देता परन्तु स्वयं वैश्यागमन जैसे निम्न कर्म में लिप्त है। तात्पर्य यह है कि हीन कर्मों में लीन है केवल श्रेष्ठ होने का दिखावा करते हैं।

मुसलमानों की दशा भी कुछ भिन्न नहीं है। ये दिखावा करते हैं कि पीर औलिया बनकर माया-मोह से दूर हैं दूसरी ओर अपनी रसना के आगे विवश है। केवल स्वाद के लिए मांसाहार करते हैं, जीव-हत्या करते हैं। जीव हिंसा करने वाले खुदा के बंदे कैसे हो सकते हैं? समाज की नीतियों के प्रतिकूल रक्त-संबंधों में विवाह करते हैं। दोनों ही सत्य की राह से भटके हैं।

इस प्रकार इन दोनों को ही ईश्वर-प्राप्ति नहीं हो सकती।

काव्य-सौन्दर्य

भाव-पक्ष

1. कबीर का समाज सुधारक रूप द्रष्टव्य है।
2. हिन्दुओं एवम् मुसलमानों दोनों के आडम्बरों पर तीखा प्रहार किया गया है।
3. आडम्बरों को ईश्वर प्राप्ति के मार्ग में बाधक माना है।
4. ईश्वर एक है। राम-रहीम में कोई भेद नहीं है। ईश्वर सर्वदा है। ईश्वर सर्वव्यापक है एवं सभी प्राणियों के हृदय में विद्यमान है। दोनों को ही मानवता अपनाने को कहा है।

कला-पक्ष

1. सधुक्कड़ी भाषा में भावों की सहज, सरल अभिव्यक्ति है।
2. शब्द-चयन, भावपूर्ण व भावानुकूल है।
3. 'सब सखियाँ' 'कहै कबीर' अनुप्रास अलंकार
4. गेय पद शैली।
5. मुक्तक शैली
6. सहज और सरलभाषा।

पद पर आधारित प्रश्न

1. कबीर ने हिन्दुओं और मुसलमानों के किन वाह्य आडम्बरों की बात कही है?

उत्तर— हिन्दू एवम् मुसलमान दोनों ही अज्ञानतावश वाह्य आडम्बरों को ही धर्म समझ बैठे हैं। धर्म के वास्तविक स्वरूप का इन्हें ज्ञान नहीं। ये दोनों ही पथभ्रष्ट हो चुके हैं।

हिन्दू वर्ण-भेद में विश्वास करते हैं। उच्च वर्ण का व्यक्ति निम्न वर्ण के व्यक्ति के साथ छुआछूत की भावना रखता है। उसे अपने बर्तन तक छूने नहीं देता। दूसरी ओर वैश्यागमन जैसे नीचकर्म में लिप्त है। मुसलमानों की दशा यह है कि इनके पीर-औलिया तक मौसमभक्षण करते हैं। समाज की नीति के विरुद्ध मुसलमान अपने ही रक्त संबंधों में विवाह करते हैं।

अभ्यास कार्य

1. कबीर के अनुसार ईश्वर प्राप्ति के मार्ग में क्या बाधा है?
2. इस पद में कबीर का कवि रूप नहीं समाज सुधारक रूप दिखाई पड़ता है, सिद्ध करें।
3. कबीर के अनुसार ईश्वर प्राप्ति कैसे की जा सकती है?

व्याख्या (उदाहरण)

पद — 2

बालम आवो.....जिव जाय रे”

प्रसंग/मूलभाव

प्रस्तुत पद ‘बीजक’ संग्रह से उद्धृत है। यहाँ कबीर का भक्तरूप द्रष्टव्य है। इस पद में कबीर ने स्वयं (जीवात्मा) को पत्नी और परमात्मा को पति मानकर परमात्मा रूपी पति से वियुक्त जीवात्मा की विरहावस्था का चित्रण किया गया है।

व्याख्या बिंदु — परमात्मा से मिलन न हो पाने के कारण कबीर को एक वियोगिनी की भाँति न अन्न भाता है न नींद आती है। निर्गुणमार्गी संत कवियों ने साधक को नायिका तथा परमात्मा को नायक के रूप में चित्रित किया है। यहाँ पति (परमात्मा) निराकार परन्तु पत्नी (साधक) साकार रूप में विद्यमान है। यहाँ कबीर निर्गुण और सगुण—दो भिन्न मतों के बीच एक साम्य स्थापित करते दिखाई देते हैं।

काव्य—सौन्दर्य

भाव—पक्ष

1. कबीर का भक्त रूप द्रष्टव्य है।
2. ज्ञान चक्षु खुलने पर साधक ईश्वर प्राप्ति के लिए आतुर हो उठा है

कला—पक्ष

1. भाषा—सधुक्कड़ी
2. 'दुखिया देह', 'कोई कहे', 'जिव जाय' अनुप्रास अलंकार
3. कामिन को है.....प्यासे को नीर दृष्टान्त अलंकार
4. लय एवम् तुकबद्ध गेय पद शैली।
5. रस—विप्रलम्भ (वियोग) शृंगार, भक्ति रस

महत्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

प्रश्न कबीर ने साधक और परमात्मा को किस रूप में चित्रित किया है?

उत्तर— कबीर ने साधक को पत्नी एवम् परमात्मा को पति के रूप में चित्रित किया है। जिस प्रकार प्रेयसी प्रियतम से मिलन के लिए आतुर रहती है उसी प्रकार ज्ञान हो जाने पर साधक (आत्मा) निरन्तर परमात्मा से मिलन को आतुर रहता है। उसे सांसारिक कार्यों में कोई सुख नहीं मिलता जैसे प्रेयसी को विरहावस्था में न अन्न भाता है न नींद आती है।

अभ्यास प्रश्न

1. इस पद में सांसारिक प्रेम का वर्णन है, फिर भी यह भक्ति का श्रेष्ठ उदाहरण है कैसे?
2. इस पद में कौन—सा रस हैं?
3. 'कामिन को हैं.....ज्यों प्यासे को नीर' में कौन—सा अलंकार हैं?